बॉल के पैसे

सुमित कुमार गुप्ता

करन भैया मैं आपको बैट नहीं दूंगा, आप बहुत तेज शॉट मारते हो और बॉल खो जाती है, प्लीज़ भैया आप अपने साथ के लोगों के साथ खेलो जाकर। करन से विनती करता धैर्य जिसकी उम्र मात्र 8 वर्ष की थी, लेकिन करन जो धैर्य की ही कॉलोनी में रहता था और उम्र में धैर्य से लगभग दोगुना था। धैर्य को धमकी देते हुए बोलता है कि चुपचाप मुझे बैट दे दो नहीं तो तुम लोगों को यहां खेलने नहीं दूंगा और हां अगर मुझसे आज तुम लोगों की बॉल खो गई तो मैं तुम लोगों को बॉल के पैसे दे दूंगा, तुम लोग नई बॉल ले आना। करन के ना मानने पर धैर्य उसको बैट दे देता है, और हमेशा की तरह करन एक जोरदार शॉट मारता है और बॉल एक बार फ़िर से खो जाती है। करन भैया देखिए बॉल खो गई है, आप बोल रहे थे कि अगर बॉल खो जाएगी तो आप पैसे देंगे। पैसे कैसे पैसे ? मैं कोई पैसा नहीं दूंगा। इतना सुनकर धैर्य करन को बोलता है तो ठीक है भैया आज हम लोग आपके घर जाकर आपकी मम्मी से शिकायत करेंगे। हां - हां ठीक है, जाओ - जाओ मेरे घर और मेरी मम्मी से शिकायत कर दो। धैर्य अपने दोस्तों को लेकर करन के घर जताता है और सारे बच्चे मिलकर करन की मम्मी को पूरी बात बताते हैं। बच्चों की बात सुनकर करन की मम्मी बच्चों से बोलती हैं कि वह आज घर आने पर करन को डांटेगी। तो धैर्य बोलता है कि आंटी पर हम लोग आज कैसे खेलेंगे। करन की मम्मी धैर्य से बोलती हैं कि बेटा मेरे पास पैसे नहीं हैं वरना मैं तुमको दे देती। आंटी की बात सुनकर सभी बच्चे मायूस हो जाते हैं और करन के घर के बाहर आकर बैठ जाते हैं। लगभग 10 मिनट के बाद करन की मम्मी बच्चों को थैला लिए पास की दुकान पर जाती हुई दिखाई देती हैं। आंटी को देखकर बच्चे भी दुकान के पास जाकर खड़े हो जाते हैं। आंटी को सामान लेकर जाते समय धैर्य आंटी से बोलता है, आंटी 10 मिनट पहले तो आप बोल रही थीं कि आपके पास पैसे नहीं हैं और अभी आप दुकान वाले को पैसे देकर समान खरीदकर लाई हैं। धैर्य की बात सुनकर करन की मम्मी सकपका जाती हैं और धैर्य को डांटते हुए बोलती हैं कि तुमको बात करने की बिल्कुल भी तमीज़ नहीं है, तुम कुछ ज़्यादा ही बोलते हो, छोटे से हो और बात बड़े लोगों की तरह करते हो, तुम्हारे घर वाले यही सीख देते हैं तुमको। नहीं आंटी मेरे घर वाले तो मुझे यह सीख देते हैं कि कभी भी किसी से भी झूठ नहीं बोलना चाहिए और वे भी कभी मुझसे झूठ नहीं बोलते हैं पर आप तो बड़ी होकर हम बच्चों से ही झूठ बोल रही हैं। धैर्य की बात सुनकर करन की मम्मी गुस्से से पैर पटककर वहां से चली जाती हैं और धैर्य अपने दोस्तों संग आज खेल ना पाने की बात सोचकर मायूस हो जाता है और वे सभी अपने - अपने घर चले जाते हैं।